लाइफलॉंग लर्निंग विभाग – परिचय

लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग की स्थापना 1962 में की गई थी। जीवन पर्यंत शिक्षा एक शैक्षिक प्रक्रिया का अभिलक्षित ध्येय होता है। तकनीकी चालित ज्ञान आधारित प्रतिस्पर्द्धात्मक अर्थव्यवस्था में अधिगम का परिदृश्य बदल रहा है। देश में निरन्तर बदल रहे सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य के अनुरूप कौशल शिक्षा के लिए नित नए प्रशिक्षण एवं अधिगम अवसरों के सृजन की आवश्यकता होती है। राजस्थान विश्वविद्यालय का लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग मानव संसाधनों के अनवरत् गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास और कौशल उन्नयन के लिए सेवाऐं प्रदान करता है। समाज एवं विश्वविद्यालय के मध्य सार्थक, अनवरत तथा प्रेरणादायक संबंध को प्रोत्साहित करना ही विभाग का लक्ष्य एवं उद्देश्य है। लोगों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास एवं उत्तम जीवन के लक्ष्य को साकार करने के लिए विभाग ट्रेनिंग कार्यक्रम, कार्यशालाऐं, संगोष्ठियां, ग्रीष्मऋतु विद्यालय, क्षमता– निर्माण एवं कौशल विकास कार्यक्रम इत्यादि वर्षभर चलाता है।

समाज विज्ञान शोध केन्द्र – परिचय

राजस्थान विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान शोध केन्द्र की स्थापना प्रख्यात समाज वैज्ञानिक प्रो. इकबाल नारायण ने 11 अक्टूबर 1975 को की थी। केन्द्र का मुख्य उद्देश्य समाज विज्ञान क्षेत्र में शोध गतिविधियों में वृहतर वैज्ञानिक खोज और अन्तः विषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना है। शोध के एक महत्वपूर्ण संस्थान के रूप में केन्द्र वैज्ञानिक अन्तः विषयक शोध के परिचालन के लिए मुख्यतः निम्नलिखित गतिविधियों का निर्वाह करता है :–

- व्याख्यानों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन।
- सोशियल साइंस एक्सपलोर, द्विभावी जर्नल का वार्षिक प्रकाशन।
- शोध कार्य प्रणाली पर विशेष रिफ्रेशर कोर्स एवं ट्रेनिंग कार्यक्रमों का आयोजन।
- विश्वविख्यात शिक्षाविदों के साथ शोधार्थियों का कम्प्यूटर प्रयोगशाला की सहायता से सम्पर्क एवं विमर्श प्रायोजित करना।
- अन्तःविषयक सामाजिक शोध पर अनवरत् विमर्श फोरम का कार्य

पेपर प्रस्तुति

आपसे निवेदन है कि आप अपने शोध–पत्र का सार (Abstract) (अधिकतम 250 शब्दों में) दिनांक **30 दिसम्बर 2017** तक ई.मेल: dlldirectoruor@gmail.com से भेज सकते है। शोध पत्र (अधिकतम 5000 शब्दों में) अंग्रेजी (MSWord, Times New Roman Font, 12 size) व हिन्दी (MSWord, KrutiDev-10 Font, 14 size) में दिनांक 05 जनवरी 2018 तक भेज सकते हैं।

पंजीयन शुल्क:

शिक्षक	–	₹ 1000/–
शोधार्थी	–	₹ 800/–
छात्र	–	₹ 500/–

बैंक का नाम : आईसीआईसीआई बैंक
खाता नं. : 674701700804
आईएफएससी कोड : ICIC0006747
चैक नामित: Director, Department of Life Long Learning

प्रतिभागियों को किसी भी प्रकार का TA/DA देय नहीं होगा।

संगोष्ठी संरक्षक:
प्रो. आर.के. कोठारी
कुलपति
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर

संगोष्ठी संयोजक:
डॉ. जयंत सिंह
निदेशक,
लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर
मो. 7976143327

संगोष्ठी आयोजन सचिव:
डॉ. राका सिंह
निदेशक
समाज विज्ञान शोध केन्द्र
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर
मो. 9928367935

राजस्थान विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति में राष्ट्रवाद : विविध आयाम

12–13 जनवरी 2018

आयोजक :
लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग
समाज विज्ञान शोध केन्द्र
राजस्थान विश्वविद्यालय
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर – 302004
राजस्थान, भारत

संगोष्ठी स्थल:
लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संगोष्ठी परिचय

भारतीय संस्कृति का मूलाधार इसका समन्वयवादी दृष्टिकोण है। विभिन्नता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। किसी भी राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना एवं राष्ट्रवाद की विचारधारा के फलने–फूलने के लिए आवश्यक है कि एक ऐतिहासिक समुदाय के रूप में राष्ट्रीय चेतना की जागृति हो, राजनीतिक तथा आर्थिक सम्प्रभूता हो, सांझा संस्कृति का विकास हो और सकारात्मक भावनाओं का प्रसार हो। एक राजनीतिक संकल्पना के रूप में राष्ट्र लोगों का ऐसा स्थाई समूह है जिनके बीच सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक–धार्मिक संबंध मात्र ही न हो बल्कि उनके बीच भावनात्मक एकात्मता एवं सांस्कृतिक एकरूपता भी हो। भारतवर्ष एक राष्ट्र के रूप में उतना ही पुराना है जितनी भारतवर्ष की सभ्यता एवं संस्कृति पुरानी है। राष्ट्र वैदिक संस्कृति का आधारभूत तत्व रहा है।

भारतवर्ष की राष्ट्रीयता की अवधारणा राज पर आधारित नहीं बल्कि संस्कृति पर आधारत रही है। प्राचीन काल में भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशों में पृथक–पृथक स्वाधीन राज्य थे परन्तु राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न राज्यों में विभक्त होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पूर्ण भारतवर्ष एक राष्ट्र माना जाता था। भारत की एकता एवं अखण्डता का आधार इसकी सांस्कृतिक एकता है। अतः भारतीय राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से स्वभाविक समरूपता और सामीप्य देखा जा सकता है।

आधुनिक अर्थों में एक राजनीतिक सिद्धान्त और एक विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के बाद 17वीं व 18वीं सदियों में प्रखरता से उभरा। पश्चिमी राष्ट्रवाद एवं भारतीय राष्ट्रवाद में सैद्धान्तिक एवं नीतिगत स्तर पर गंभीर विभिन्नताएँ हैं। राष्ट्रवाद एकीकरण का एक बहुत प्रभावशाली माध्यम है। यह आध्यात्मिक संबंध का ही एक प्रकार है जो भाषा, धर्म, जाति, साहित्य, इतिहास, परम्पराओं की एकता एवं एकरूपता लिए लोगों को एकसाथ जोड़ता है। साथ ही यह सांझा आर्थिक व राजनीतिक हितों और भौगोलिक एकता को सुदृढ़ करता है। एक राष्ट्रवादी की एकमात्र चिंता अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता एवं विकास ही होता है। वह पराधीनता से घृणा करता है। वह अपने राष्ट्र से अथाह प्रेम करता है एवं अपने राष्ट्र के अस्तित्व के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देता है।

भारतवर्ष में राष्ट्रवाद ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सत्ता के विरोधस्वरूप उपजा। भारतवर्ष में राष्ट्रवादी विचारधारा का अंकुरण 17वीं सदी में ही होने लगा था परन्तु 1857 के प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन के साथ ही इसने अपना पूर्ण विकसित रूप ग्रहण किया। भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण जो राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उसके परिणामस्वरूप भारत में राजनीतिक जागृति के साथ सामाजिक एवं धार्मिक जागृति का भी सूत्रपात्र हुआ। वास्तव में देखा जाए तो सामाजिक एवं धार्मिक जागृति के परिणामस्वरूप वैश्वीकरण के शुरूआती दौर में विश्व स्तर पर राष्ट्रवाद की विचारधारा पर गहरा आघत पहुंचा। परन्तु समकालीन वैश्विक परिदृश्य में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रवादी ताकतें एक नये रूप में उर्जा के साथ पुनः उभर रहे हैं। आज वैश्विक पटल पर राष्ट्रवादी ताकतें दुनियां के अनेक मुल्कों में राजसत्ता के प्रतिष्ठानों पर पदासीन हो रहे और राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता के नये दौर का आगाज हो रहा है। आज राष्ट्रवाद की विचारधारा वैश्वीकरण की प्रक्रिया को गंभीर चुनौती दे रही है। भारतीय राष्ट्रवाद अन्तर्राष्ट्रीयवाद का विरोधी न होकर सह–अस्तित्ववादी है। "वसुधैवकुटुम्बकम" और "सर्वः भवन्तु सुखिनः" के आदर्शों पर आधारित भारतीय संस्कृति भारतीय राष्ट्र के सर्वोपरिता के साथ वैश्विक बन्धुत्व, शान्ति, सुरक्षा एवं कल्याण को लेकर चलती है। आज राष्ट्रवाद बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, राजनीतिज्ञों और जनसामान्य में चर्चा का विषय बना हुआ है।

संगोष्ठी की उप–विषयवस्तु

1. राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक आयाम
2. राष्ट्रवाद के राजनीतिक आयाम
3. राष्ट्रवाद के साहित्यिक आयाम
5. राष्ट्रवाद के शैक्षिक आयाम
6. राष्ट्रवाद से संबंधित अन्य आयाम

राजस्थान विश्वविद्यालय – परिचय

राजस्थान विश्वविद्यालय लगभग 300 एकड़ में फैला राजस्थान का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। यह मानविकी समाज विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य एवं विधि अध्ययन आदि विषयों में उच्च स्तर की शिक्षा और शोध कार्य में संलग्न भारत के अग्रणी शिक्षण संस्थानों में से है। इसकी स्थापना 8 जनवरी 1947 को राजपूताना विश्वविद्यालय के नाम से हुई थी, 1956 में इसे वर्तमान नाम दिया गया। डॉ. मोहन सिंह मेहता इसके पहले संस्थापक उप कुलपति थे। आज यह राजस्थान में शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र है। देश–विदेश के विद्यार्थी यहाँ पढ़ने आते हैं। इसके 6 संघटक कालेज, 11 मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र, 37 स्नातकोत्तर विभाग हैं। 305 महाविद्यालय इससे जुड़े हैं। यहाँ 37 विषयों में डाक्टरेट, 20 विषयों में एम.फिल, 48 विषयों में स्नातकोत्तर और 14 विषयों में स्नातक डिग्री देता है। विश्वविद्यालय को नेशनल एसेसमेंट ऐंड एक्रीडिटेशन काउंसिल (NAAC) की A ग्रेड प्राप्त है।

जयपुर – परिचय

जयपुर जिसे गुलाबी नगर के नाम से भी जाना जाता है तथा राज्य की राजधानी है। आमेर के तौर पर यह जयपुर नाम से प्रसिद्ध प्राचीन रजवाड़े की राजधानी भी रहा है। जयपुर की स्थापना 1728 में आमेर के महाराजा जयसिंह द्वितीय ने की थी। जयपुर अपनी समृद्ध भवन–निर्माण परंपरा, सरस–संस्कृति और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर तीन ओर से अरावली पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है। जयपुर शहर की पहचान यहां के महलों और पुराने घरों में लगे गुलाबी धौलपुरी पत्थरों से होती है जो यहां के स्थापत्य की खूबी है। 1876 में तत्कालीन महाराज सवाई रामसिंह ने इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ प्रिंस ऑफ वेल्स युवराज अल्बर्ट के स्वागत में पूरे शहर को गुलाबी रंग से आच्छादित करवा दिया था। तभी से शहर का नाम गुलाबी नगरी पड़ा है। 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर भारत का दसवां सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर है। राजा जयसिंह द्वितीय के नाम पर ही इस शहर का नाम जयपुर पड़ा। जयपुर भारत के टूरिस्ट सर्किट गोल्डन ट्रायंगल का हिस्सा भी है। जयपुर को आधुनिक शहरी योजनाकारों द्वारा सबसे नियोजित और व्यवस्थित शहरों में गिना जाता है।

राजस्थान विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति में राष्ट्रवाद : विविध आयाम

12–13 जनवरी 2018

पंजीयन फार्म

1. नाम : .....
2. लिंग – स्त्री/पुरुष: .....
3. पदनाम : .....
4. संस्था : .....
5. पता : .....

   .....
6. ई–मेल : .....
7. मो./फोन नं. : .....
8. पत्र का शीर्षक: .....

   .....
9. आवास आवश्यकता : हाँ/नहीं
10. साथी : नाम : .....

    पुरुष / स्त्री
11. पंजीयन शुल्क विवरण : .....

    .....

    राशि जमा : .....

    दिनांक : .....

    सन्दर्भ नं. ..... बैंक .....

    शाखा ..... शहर .....

.13. अन्य सूचना, यदि कोई हो तो .....

    .....

दिनांक: .....

स्थान : ..... हस्ताक्षर